मध्यमा द्वितीय वर्ष

गायन - वादन (स्वरवाद्य)

पूर्णांक : 250 **न्यूनतम :** 88

क्रियात्मक : 150 **न्यूनतम :** 53, **शास्त्र :** 100 **न्यूनतम :** 35

शास्त्र :

१) पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवेचन तथा सोदाहरण समानता - विभिन्नता का अध्ययन। स्वर समुदाय से राग पहचानना और स्वर विस्तार करना।

२) पहले वर्ष से अबतक के सभी तालों का विस्तृत अध्ययन एवं उन्हे पं. विष्णु दिगंबर एवम् पं. भातखंडे स्वरलिपिमें लिखने का अभ्यास।

३) पाठ्यक्रम के सभी तालों की दुगुन चौगुन दोनों स्वरलिपियों में लिखने की क्षमता।

४) पाठ्यक्रम में सीखी हुई सभी बंदिशों को दोनों स्वरलिपियों में स्वरलिपिबद्ध करने की क्षमता।

५) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का विस्तृत अध्ययन।

   नाद, श्रुति, स्वरस्थान, सप्तक, अष्टक, पूर्वांग - उत्तरांग, वर्ण, अलंकार, वादी - संवादी, अर्ध्वदर्शक स्वर, समप्रकृतिक राग, प्रबंध, वस्तु, रूपक, ग्रह, अंश, न्यास।

६) आधुनिक एवम् प्राचीन राग लक्षण, जातिगायन, सन्यास, विन्यास, अपन्यास, अल्पत्त्व - बहुत्त्व, आविर्भाव - तिरोभाव, गायकी - नायकी इसका परिचय।

संगीतज्ञों की जीवनी :- गोपालनायक, अमीर खुसरो, मानसिंह तोमर, जयदेव, त्यागराज, तानसेन, पुरंदरदास,

प्राचीन मूल सप्तक में 22 श्रुतियों का भरत के अनुसार सात स्वरों मे विभाजन।

गायकों के गुणदोष के बारे में 'संगीत रत्नाकर' मे दिये विचारों की विस्तृत जानकारी।

निम्नलिखित विषयोंपर निबंध लिखने की क्षमता :-

१) शास्त्रीय संगीत और लोकसंगीत

२) संगीत विकास में विज्ञान का सहयोग

३) साहित्य और संगीत

४) जीवन में संगीत का महत्त्व

क्रियात्मक :

अ) स्वरज्ञान :-

१) तानपूरा अपने स्वर में मिलाने की क्षमता। तानों की विशेष तैयारी। राग का समुचित विकास करने की क्षमता। रागों का शुद्ध स्वरूप प्रस्तुत करना। आलाप, बोलआलाप के साथ बढ़त करना। तबला सुर में मिलाने का साधारण ज्ञान / ठेका बजाने का साधारण ज्ञान।

आ) रागज्ञान :-

२) निम्नलिखित छह रागों में विलंबित ख्याल (दो अलग तालों में) तथा द्रुत ख्याल/मसीतखानी और रजाखानी गत। रागों का मुखड़ा अच्छी तरह से पकड़ने की क्षमता होना तथा हर एक राग का पंद्रह मिनट तक विस्तार करना अनिवार्य है।

(१) भीमपलासी, (२) वृंदावनी सारंग, (३) केदार,
(४) जौनपुरी, (५) मालकंस, (६) भैरव

सामान्यज्ञान के लिये छह राग दिये हैं। इन सब रागों में एक एक बंदिश अथवा रजाखानी गत आलाप तान/तोड़ों के साथ प्रस्तुत

करना आना चाहिये।

(१) शंकरा (२) जयजयवंती (३) गौड़सारंग

(४) पूरिया धनाश्री (५) कामोद, (६) छायानट

३) उपरिनिर्दिष्ट रागों में एक धृपद, एक धमार दुगुन, तिगुन, चौगुन मे गाने की क्षमता। वादन के विद्यार्थी अपने वाद्य की विशेषता के अनुसार तीव्रा, आड़ाचौताल में इतनी ही गतें तैयार करें।

४) पाठ्यक्रम के रागों मे से किन्ही दो रागों मे तराने / द्रुतगतें प्रस्तुत करना।

५) 'जयजगदीश हरे' यह मंडल की प्रार्थना गाने / बजाने की क्षमता।

६) एक भजन, एक ग़ज़ल, एक देशभक्तिपर गीत, एक लोक गीत/धुन प्रस्तुत करने की क्षमता।

इ) तालज्ञान :-

रूपक, दीपचंदी, चौताल की दुगुन बोलना। अंकों की सहायता से 2 में 3, 3 में 2 बोलने की क्षमता अथवा किसी एक ताल कों दूसरे तालों में रूपांतरित करने की क्षमता।

अंकपत्रिका :

सूचना : *इस परीक्षा के लिए 40 मिनट का समय निर्धारित किया गया है। आधार स्वर के लिए तानपुरा ही लेना अनिवार्य है। हार्मोनियम की संगत स्वीकार्य नहीं है। हर एक कॉलम में अलग अलग राग पूछे जाएँ, जिससे पूर्ण पाठ्यक्रम जाँचा जा सके।*

विलंबित बंदिशें :-

तीन पर्यायी रागो में से किसी एक राग में बंदिश आलाप तानों के साथ (सात मिनट) : 14 अंक । इस वर्ष के एक अन्य राग में दो आलाप या तानों के साथ बंदिश : 8 अंक। इस वर्ष के एक अन्य राग में तथा पिछले एक राग में केवल बंदिश रागवाचक आलाप के साथ : 4 + 4 अंक।

कुल अंक – 30 अंक ।

मध्यलय की बंदिशें :-

इस वर्ष के एक राग में संपूर्ण विस्तार के साथ बंदिश (पाँच मिनट) : 10 अंक । अन्य एक राग में दो आलाप तथा पाँच तानों के साथ बंदिश : 8 अंक । पिछले राग में तीन आलाप के साथ बंदिश : 7 अंक । कुल 25 अंक।

धृपद, धमार :-

धृपद, धमार (वाद्य हो तो तत्सम गत तालबद्ध अलंकार तथा ठाह में) : 6 अंक । स्थाई या अंतरे की अथवा अलंकार की चौगुन : 9 अंक । कुल : 15 अंक।

अन्य बंदिशे :-

इस वर्ष के रागों में तराना तथा दृत एकताल की बंदिश/गत, इनमें से एक प्रकार :10 अंक।

उपशास्त्रीय गीत प्रकार :-

उपशास्त्रीय संगीत के अंतर्गत कोई एक गीत प्रकार या धुन : 10 अंक ।

ताल लय ज्ञान :-

इस वर्ष के दो ठेकों को ताली खाली देकर बोलना : 4 अंक । इन में से एक की तिगुन करना : 3 अंक । एक की चौगुन करना : 3 अंक । एक विलंबित तथा एक मध्य लय का ठेका पहचानना : 4 अंक । अंकों की सहायता से 2 में 3 तथा 3 में 2 बोलना : 6 अंक ।
कुल 20 अंक।

रागविस्तार :- इस वर्ष के दो तथा पिछले वर्ष के तीन रागों के आलाप : 20 अंक।

राग पहचान :-

इस वर्ष के दो तथा पिछले वर्ष के तीन राग : 10 अंक ।

स्वरलिपि पढना :-

चार मात्रा की पंक्ति, जिस में एक, आधी तथा पाव मात्रा के चिन्ह हों और

तालबद्ध सरगम गीत हार्मोनियम पर बजाना तथा गाना 10 अंक।

कुल मौखिक : 150 अंक।

लिखित–100 अंक ।

सर्वयोग : 250 अंक।